ओउम्

-- वैदिक होली --

‘होली के स्वरूप को जानकर विवेकपूर्वक मनाना समीचीन’

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

भारत वर्ष में फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होली का पर्व मनाने की परम्परा काफी पुरानी है। वर्तमान होली का स्वरूप इस दिन रात्रि में सामूहिक रूप से लकड़ियों को इकट्ठा करके रात्रि में पण्डित जी के द्वारा मन्त्रोच्चार पूर्वक उसका दहन कर किया जाता है। **इसे देखकर आर्य वैदिक ज्ञान में प्रवृत्ति हाने के कारण हमें यज्ञ की स्मृति होती है।** प्राचीन काल से ही हमारे यहां अमावस्या व पौर्ण मास पर विशेष यज्ञों को करने का विधान है जिसे पक्षेष्टि यज्ञ कहा जाता है। हम जानते हैं कि महाभारत काल के बाद एक समय ऐसा आया कि जब हमारे ऋषि-मुनियों की परम्परा समाप्त हो गई। ज्ञानी लोगों के समाप्त होने पर अल्प-ज्ञानी पण्डितों ने अपनी अल्पमति व स्वार्थ बुद्धि से प्रेरित होकर धर्म व कर्म को इच्छानुसार तोड़ा व मरोड़ा। इस होली से भिन्न हमारे यहां पशु यज्ञों - अश्वमेध, पुरूषमेध, गोमेध, अजमेध व अविमेध में इन नामों से जुड़े पशुओं को मारकर उनके मांस आदि से आहुतियां देने तक का विधान कर डाला गया। इससे विदित होता है कि होली के वास्तविक रूप में भी कुछ परिवर्तन तो अवश्य ही हुआ है। पौर्ण मास के दिन रात्रि में पूर्ण चन्द्रमा आकाश में दृष्टिगोचर होता है।

मनमोहन कुमार आर्य

जिस प्रकार दिन में सारी पृथिवी सूर्य के प्रकाश से जगमगा उठती है, उसी प्रकार पूर्ण मास के दिन रात्रि में भी पृथिवी अन्य दिनों में सबसे अधिक प्रकाशमान होती है। समुद्रों में तो इस दिन ज्वार भाटा भी आता है। चन्द्रमा का सम्बन्ध हमारी औषधियों एवं फलों से है व साथ हि हमारे मन से भी है। मनुष्य का मन ही बन्धन व मोक्ष का कारण होता है यह हम भली-भांति जानते हैं। बन्धन से मुक्त होने के लिए हमें ईश्वरोपासना व यज्ञ आदि कर्म करने होते हैं और इन्हीं से मोक्ष भी प्राप्त होता है। अतः हमारे यहां यज्ञों व अग्निहोत्रों की परम्परा सृष्टि के आरम्भ से ही रही है। सृष्टिमें भी नाना प्रकार के यज्ञ चल रहे हैं। सूर्य की गर्मी से समुद्र व नदी आदि का जल वाष्प बन कर आकाश या वायुमण्डल में ऊपर उठता है। वायु मण्डल के जल से बादल बनते हैं। वह आपस में टकराते हैं तो आकाश में विद्युत चमकती है। वर्षा होती है। वर्षा का जल हमारे खेतों में अन्न की उत्पत्ति में सहायक होता है और यही जल हमारे कुओं, नदियों आदि में भी पहुंचता है। इसको पी कर हमारा शरीर व प्राण स्वस्थ रहते हैं। यह जल और वायु ही हमारे जीवन का आधार है। इस प्रकार से यह जल, वायु व आदित्य मिलकर एक सृष्टि-यज्ञ करते हैं। इससे मिलता जुलता ही हमारा अग्निहोत्र यज्ञ भी होता है जिससे सृष्टि व पर्यावरण को लाभ होने के साथ यज्ञकर्ता को भी आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक लाभ प्राप्त होते हैं।

होली के दिन रात्रि में होली जलाने की परम्परा है। इसके पीछे कारण यह लगता है कि रात्रि में चन्द्रमा अपनी पूर्ण आभा के साथ आकाश में दर्शन दे रहा होता है। हमारे यहां एक पौराणिक पर्व करवाचौथ मनाया जाता है। इस दिन भी रात्रि को चन्द्रमा के दर्शन कर स्त्रियां व्रत-उपवास तोड़ती हैं, यद्यपि यह पर्व पूर्णिमा को न मनाकर इसे शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। हमारे मुस्लिम भाई भी ईद का पर्व चन्द्र दिखने के अगले दिन ही मनाते हैं। इससे यह अनुमान होता है कि पौराणिक काल में चन्द्रमा के दर्शन को भी पुण्यकारी माना जाता था और सम्भवतः इसी कारण होली को रात्रि में जलाने की परम्परा पड़ी। यह परम्परा पूर्णतया पौराणिक है। यहां यह कहना उचित प्रतीत होता है कि चन्द्रमा का गुण सूर्य के प्रकाश को ग्रहण कर उसे रात्रि में पृथिवी पर पहुंचाना है जिससे मानव जीवन अनेक प्रकार से लाभान्वित होता है। हमारे यहां नाम के साथ ‘‘चन्द्र’’ शब्द लगाने की परम्परा भी रही है। इससे लगता है कि हमें चन्द्रमा के गुणों को जानकर उसे अपने जीवन में स्थान देना चहिये। पूर्ण मास यज्ञ करने का भी सम्भवतः यही प्रयोजन लगता है। यज्ञ व अग्निहोत्र का समय प्रातः सूर्योदय व उसके बाद तथा सायंकाल सूर्यास्त से पूर्व है। परमात्मा ने रात्रि का समय सोने के लिए बनाया है और प्रातः ब्रह्म-मुहर्त में उठने का विधान हमारे प्राचीन ऋषियों ने किया है। दिन में सोने का निषेध है। अतः रात्रि में समय पर सोयेगें तभी प्रातः 4 बजे उठ सकते हैं। रात्रि में सूर्यास्त के बाद व चन्द्रोदय होने पर होली को जलाना अशास्त्रीय होने से अनुचित है। होली को अधिक से अधिक सूर्यास्त से पूर्व जला लेना चाहिये। हमारी दृष्टि में होली को शास्त्रीय दृष्टि से दिन में लगभग 10 व ग्यारह व अधिक से अधिक 12 बजे से पूर्व यज्ञ व अग्निहोत्र की रीति से करना या जलाना ही उचित है। वृहत यज्ञ होने चाहिये जिसमें यज्ञ सामग्री व घृत का प्रयोग उचित मात्रा में होना चाहिये। एक मुहल्ले में एक होली जले, मुहल्ले के सभी लोग उस होली-यज्ञ में सम्मिलित

हों, वैदिक विद्वान यज्ञ करायें, वैदिक धर्म व संस्कृति की संसार के सभी मतों से महत्ता विद्वान वक्ता सबको समझायें, इससे होली का पर्व मनानें की सार्थकता प्रतीत होती है। इसी कर्म में यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि होली पर्व का प्राचीन नाम **"वासन्ती नवसस्येष्टि"** है। हमारा शरीर जो हमारी आत्मा को परमात्मा से मिलाने का साधन है, अन्नमय है। इसका पोषण अन्न से होता है। गेहूं अन्न का मुख्य प्रतीक है। हमारे किसान भाईयों ने गेहूं की फसल कुछ महीने पहिले बोई थी जो आज उनके खेतों में लहलहा रही है। सारे किसान तो खुश हैं ही, देश का प्रत्येक व्यक्ति भी प्रसन्न व सन्तुष्ट है कि हमें परमात्मा की ओर से एक वर्ष के लिए हमारे शरीर का आधार अन्न प्रदान किया जा रहा है। यह अन्न कुछ ही दिनों में खेत-खलिहानों में तथा वहां से होकर हमारे घरों व बाजार में आ जायेगा। इस अन्न से हमें ऊर्जा, शक्ति, शान्ति, आरोग्य, आयुवृद्धि और न जाने क्या-क्या लाभ होगें। अतः सब देशवासियों को जगद-नियन्ता का धन्यवाद करने का अवसर भी उपस्थित है। हमारे ऋषि-मुनि पारदर्शी विद्वान थे। वह जानते थे कि परमात्मा का धन्यवाद करने का यथार्थ तरीका क्या है? उन्होंने इसके लिए विधियां बनाईं जिसे सामान्यतः यज्ञ-अग्निहोत्र कहते हैं। हमारे यहां मुख्यतः 3 प्रकार के यज्ञ होते हैं। पहला अग्निहोत्र यज्ञ नित्यकर्मो में परिगणित है। दूसरे काम्य यज्ञ होते हैं जो विशेष कामना को रखकर किये जाते हैं, यथा पुत्रेष्टि यज्ञ। तीसरे यज्ञ नैमित्तिक यज्ञ होते हैं। ऐसे यज्ञ जो विशेष कारण से किए जाते हैं। होली या नवसस्येष्टि यज्ञ, नैमित्तिक यज्ञ है जिसे करके ईश्वर का धन्यवाद भली प्रकार से होता है और साथ ही इससे दृष्ट व अदृष्ट लाभ इसको करने वाले व सहयोग देने वालों को प्राप्त होते हैं। इस यज्ञ के बारे में पूर्व लिखा ही गया है, इतना कहना उचित होगा कि आजकल की होली प्राचीन काल में किए जाने वाले इस प्रकार के वृहत्त यज्ञों का किंचित विकृत रूप है। हमारे पूर्वजों ने यज्ञ के वास्तविक अभिप्राय को भूल जाने पर भी इसको होली के रूप में सुरक्षित रखा है, इसके लिए वह सब धन्यवाद के पात्र है। हमें केवल आज इस पर्व की गहराई में जाकर इसे प्राचीन पद्धति से ही इसे सम्पादित करना चाहिये।

नवसस्येष्टि पर पुनः विचार करते हैं। गेहूं की फसल किसानों के खेतों में लहलहा रही है। फसल का खेतों में लहलहाना किसान के मन में उमंग, उत्साह व जोश भरता है। इससे वह अति प्रसन्नता व उल्लास से भर जाता है। एक वर्ष के खाद्यान्न की उपलब्धि ईश्वर उसे व उसके द्वारा समस्त देशवासियों को करा रहे हैं। **इसी कारण से महर्षि दयानन्द ने किसानों का राजाओं का भी राजा कहा है।** हमारे राजनीतिज्ञों को यह बात समझनी है। यदि देश अन्न ही नहीं होगा तो राजा कहा के होगें? पूर्ण मास के दिन आज होली पर हम **तेरा तुझ को अर्पण** की भावना बनाकर नव-अन्न-गेहूं के दानों की होली-यज्ञाग्नि में आहुति देकर उसके प्रतीक से स्वयं के जीवन को ईश्वरोपासना में समर्पित कर अग्निमय व अग्नि-समान, किंचित उष्ण, चमकदार, प्रकाशमान व ज्ञान से पूर्ण होने का प्रयास करें व सन्ध्योपासन, स्वाध्याय, वेद विषयों का चिन्तन-मनन कर अपने विचारों को निश्चित व स्थिर करें। उनके आचारण करने का संकल्प लें। **ईश्वर की उपासना एक मात्र उसके ध्यान द्वारा ही सम्भव है।** अन्य किसी प्रकार की पूजा ईश्वर से हमें दूर करती है, ध्यान से हम ईश्वर से निकटस्थ होते हैं। यज्ञ इसीलिए करते हैं कि यज्ञ से भी ईश्वर की निकटता प्राप्त होकर, यज्ञ के आध्यात्मिक, अधिभौतिक व आधिदैविक लाभ प्राप्त होते हैं, हमें भी वह प्राप्त हो सकें।

होली का पर्व वसन्त ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है। चैत्र व बैसाख वसन्त ऋतु हैं। इस अवसर पर पतझड़ की पूर्ण समाप्ती, वनस्पति जगत ने एक प्रकार से पुराने वस्त्र उतार कर नये वस्त्रों को धारण किया हुआ है, ऐसा अनुभव होता है। वृक्षों पर नये पत्ते, फूलों के पौधे, फूलों से सज-धज कर सुगन्ध प्रसारित करते हुए परमात्मा की स्तुति व उपासना करते हुए लग रहे हैं। परमात्मा की स्तुति व योग-उपासना के लिए जैसे साधक यम, नियम व प्राणायाम आदि से तैयारी करता है, उसी प्रकार वृक्ष व पौधे भी अपने पतझड़ वाले पूर्व स्वरूप को बदल कर सृष्टिकर्ता ईश्वर का अपने नये स्वरूप जो सुन्दर, आकर्षक, सुगन्ध युक्त, अभद्रता से मुक्त है, सजे-धजे हैं। ईश्वर ने इनमें सुगन्धि व पुष्टि वर्धन किया है। यह सब ईश्वर ने हमें भी उदाहरण देने के लिए किया है जिससे कि हम भी फूलों से शिक्षा लेकर उनके अनुसार स्वयं को संवारें, ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना व उपासना से। पुष्पों की भांति सुन्दर व सुगन्धित जीवन बनाकर धन्य हों। तभी ईश्वर के धन्यवाद स्वरूप की जाने वाली हमारी स्तुति-प्रार्थना-उपासना सफल होगी।

सृष्टि में एक नियम कार्य कर रहा है। हर प्राणी यथावश्यकता भागों का भोग करता है। हम शरीर में अपनी श्वांस में प्राण वायु एक सीमित व निश्चित मात्रा में लेते हैं। जल निश्चित मात्रा से अधिक नहीं लेते। भोजन व स्वादिष्ट व्यंजन व मिष्ठान्न की भी सीमा होती है। आवश्यकता से अधिक लेने पर हानि की सम्भवना रहती है। अतः हमें सांसारिक पदार्थो का आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना है। कहीं ऐसा न हो कि अधिक अन्न, धन, साधनों के संचय से दुःखद परिणाम हमें प्राप्त हों। भगवान मनु ने चेतनावनी दी है कि अर्थ व काम में आसक्त मनुष्य को धर्म अर्थात् सत्याचार, ईश्वरोपासना आदि का ज्ञान नहीं होता और न हि ईश्वर का साक्षात्कार होता है। जो मनुष्य धन व अर्थ की एषणा से भरा है वह धर्म-कर्म, वेदानुसार सफलतापूर्वक नही कर सकता। आज के युग की यह बड़ी समस्या

है। लोग अन्धाधुन्द, अविवेकी बनकर, अर्थ संचय में लगे हुए हैं। ऐसे लोग आस्तिक न होकर नास्तिक लगते हैं। उनका वर्तमान व परजन्म बिगड़ रहा है। होली के दिन विवेक से निश्चय कर इसे सन्तुलित, उपादेय बनाये व धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति के अनुरूप जीवन को बनाये जैसा कि सत्शास्त्रों में उल्लेख है।

होली का सन्देश है कि हमें अपने जीवन को शुद्ध, पवित्र, आकर्षक, अनेक रंगों व गुणों से विभूषित, सुगन्धित, यशस्वी व कीर्तिमान, आध्यत्मिक ज्ञान से परिपूर्ण, परोपकारमय, भूखों को अन्न प्रदान कर सफल करना है। ईश्वर किसान को आवश्यकता से अधिक अन्न इसलिए देता है कि वह स्वयं भी उससे तृप्त हो व जो अधिक मिला है वह दूसरों के लिए है। यदि उसका उपयोग नहीं करेगा तो यह अन्न समय के साथ उपयोगी न रहकर उपयोग ही न हो पायेगा, सड़ने लगेगा व इसमें कीड़े लग सकते हैं, और यह भक्षण योग्य नहीं रहेगा। हम जो कार्य करते हैं और उससे जो सफलता मिलती है, उसमें यह सन्देश छुपा होता है कि उस सफलता में अर्जित हुआ धन-पदार्थ-साधन अपनी आवश्यकतानुरूप रखकर शेष को देशवासी व समाज को प्रदान कर दें, दान कर दें। वेद-विद्या के संरक्षण, संवर्धन, प्रचार-प्रसार में किया गया व्यय-दान सर्वोत्तम व विशिष्ट होता है। हमें भी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कार्यो में धन-व्यय करना चाहिये। गुरूकुल वेद-विद्या के शिक्षण से जुड़े हैं। वहां सन्ध्योपासना व यज्ञ भी होते हैं तथा उनसे ईश्वरप्रोक्त धर्म व संस्कृति की रक्षा होती है। हमारा लक्ष्य होना चाहिये कि आज के हमारे सभी स्कूल, गुरूकुलों का रूप ले लें। हमारे देश के सभी स्कूलों में कक्षाओं में पढ़ाई का आरम्भ सन्ध्या व यज्ञ से हो व छुटटी भी सन्ध्या करके हो। स्कूलों में हम हिन्दी-अंग्रेजी के साथ, संस्कृत भी अनिवार्य रूप से पढ़े। स्कूलों में विज्ञान, गणित, सामान्य विषयों के साथ आध्यात्मिक शिक्षा का भी यथोचित प्रबन्ध होना चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों व सम्पूर्ण वेदभाष्य व वैदिक वांग्मय का सार कक्षा 1 से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक अध्ययन कराया जाना चाहिये। ऐसे न होने से बच्चों को अच्छे संस्कारों के न मिलने से उनके जीवन में दुष्प्रवृत्तियां स्थान ले रही हैं। यह शिक्षा चरित्र निर्माण में भी सहायक होगी। यदि एमडीएच की फैक्ट्रियों में सभी कर्मचारी प्रातः या पूर्वान्ह में सन्ध्या व यज्ञ कर सकते हैं (हमनें अनेकों से यह सुना व जाना है) तो विद्यालयों में तो यह कार्य बहुत आसानी से नित्य प्रति हो सकता है। विद्यालयों में यह यज्ञ सभी बच्चों की उपस्थिति में हों तथा सबकी सहभागिता यज्ञ कार्यो में हो। 30 से 45 मिनट तक का यह कालांश या पीरियड हो सकता है। डीएवी विद्यालयों में शायद् पहले ऐसा होता था और अब भी होता है, ऐसा अनुमान है। विद्यालयों में यह उपयोगी होगा, इससे चरित्र-निर्माण व संस्कार आधारित शिक्षा देने का उद्देश्य पूरा होगा। यदि हममें कुछ भी अच्छे संस्कार हैं तो वह सन्ध्या, यज्ञ व स्वाध्याय से ही आये हैं।

होली के अगले दिन चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को रंगों को शालीनता से लगाना चाहिये। दुर्व्यस्नों, मदिरापान व अभक्ष्य पदार्थों से दूर रहकर, परस्पर मिलकर, मतभेदों को दूर कर, प्रेम व स्नेह के साथ मिलकर पर्व को मनाने के साथ पूरे वर्ष भर सबके साथ प्रेम व स्नेह का व्यवहार करने का प्रयास करते रहना समुचित लगता है। होली के अवसर पर सबकों हमारी शुभकामनायें।

-मनमोहन कुमार आर्य

पताः 261/196 चुक्खूवाला-2,
देहरादून-248001
इमेलः manmohanarya@gmail.com
दूरभाषः 09412985121